SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st Year **SESSION** – 20-22

SUBJECT - EPC-3 (ICT)

TOPIC NAME – UNIT-2 (सूचना-सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोग)

DATE - 02.02.22

⇒ सूचना-सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोग :-

सूचना-सम्प्रेषण तकनीकी के निम्न उपयोग है :-

1. पाठ्य-वस्तु एवं उसके उद्देश्यों का निर्धारण करना :- सर्वप्रथम पाठ्य-वस्तु का चयन किया जाता है। प्रकरण के चयन में छात्रों के मानसिक स्तर, रूचि, आयु आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है। प्रकरण की उपयोगिता सम्प्रेषण प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। क्योंकि अनुपयोगी होने की दशा में छात्र की पढ़ने में रूचि कम हो जाती है जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया भी प्रभावित होती है।

2. उपयुक्त सम्प्रेषण तकनीकी का चयन करना :- सम्प्रेषण हेतु किस तकनीकी का प्रयोग करना प्रभावी रहेगा, उसको सुनिश्चित किया जाता है। उसके लिए संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षक की विशेषज्ञता

एवं छात्र की रुचि को ध्यान में रखा जाता है।

जैसे:- यदि हमें ज्वालामुखी विस्फोट से छात्रों को परिचित कराना है तो उस पर आधारित एक वृत चित्र या फिल्म अधिक प्रभावी होगी।

3. उपयुक्त तकनीकियों का सुव्यवस्थित करना:- तकनीकियों को एक क्रम के अन्तर्गत रखा जाता है। इसमें तार्किक क्रमबद्धता का पालन करने का पूरा प्रयास किया जाता है। तार्किक क्रमबद्धता से ही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया प्रभावी होती है।

4. मूल्यांकन की व्यवस्था करना:- मूल्यांकन की सम्पूर्ण व्यवस्था की जाती है, मूल्यांकन संबंधी सभी आवश्यकताओं की जानकारी ली जा है और उन्हे उपलब्ध कराने के लिए सभी निर्णय लिये जाते है। इस प्रकार हम देखते है कि मूल्यांकन में सभी निर्णय, जैसे - विधि, अंकन, निष्कर्ष, टैस्ट का प्रकार आदि लिये जाते है जिससे मूल्यांकन उचित प्रकार से हो सके।

E-LEARNING (इलेक्ट्रानिक लर्निंग)

शिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की कुरीतियों को समाप्त करने का एक प्रभावी कारक भी है। औपचारिक शिक्षा के प्रमुख केन्द्र विद्यालय होते थे। विद्यालय एक निश्चित प्रक्रिया के अनुरूप शिक्षा प्रदान करते है। प्राचीन समय में शिक्षक ही ज्ञान का स्त्रोत माने जाते थे एवं छात्रों को शिक्षित करते थे।

Computer एवं Internet के अविष्कार ने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांति ला दी। Internet के प्रयोग ने छात्रों के लिए नई-नई सम्भावनायें पैदा की। ज्ञान-प्राप्ति Internet के प्रयोग से बहुत सरल हो गया।

तकनीकी के प्रयोग ने शिक्षा का माध्यम सिर्फ किताबें एवं शिक्षकों का व्याख्यान ही नहीं रह गया बल्कि computer, Radio, film, mobile को भी शिक्षा प्राप्त करने का साधन बना दिया।

E-learning अर्थ एवं परिभाषा: ई-लर्निंग, ई और लर्निंग दो शब्दों के योग से बना है, जहाँ ई-शब्द इलेक्ट्रानिक माध्यम का सूचक है वही लर्निंग शब्द का आशय अधिगम या सीखने से है।

ऐसे में यह कहा जा सकता है कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा को E-learning कहा जाता है।

ई-लर्निंग का सबसे ~~पहिले~~ पहला प्रयोग वर्ष 1960 में अमेरिका में देखा गया। जहाँ शिक्षार्थी में स्थित इलिनियोस विश्वविद्यालय की कक्षाओं के computers को एक server से जोड़ दिया गया। सभी छात्र अब कक्षा में अपने computer पर बैठकर शिक्षकों के व्याख्यान को सुन सकते थे।

1. Derek stockley के अनुसार, "E-learning ट्रेनिंग एवं अधिगम संबंधी कार्यक्रमों को इलेक्ट्रानिक माध्यम से उपलब्ध कराना है। computer एवं अन्य उपकरणों (जैसे-मोबाइल फोन) का शिक्षा प्रदान के क्षेत्र में प्रयोग करना ही E-learning है।"

2. John sener के अनुसार, "E-learning का आशय Electronic अधिगम से है और इसका अर्थ पाठ्यवस्तु को इलेक्ट्रानिक माध्यम से उपलब्ध कराना है। पाठ्यवस्तु विद्यालय से संबंधित व्यावसायिक ट्रेनिंग से संबंधित या फिर दूरस्थ शिक्षा पर आधारित हो सकती है।"

⇒ **E-learning की विशेषताएँ:-** E-learning की निम्न विशेषताएं हैं-

1. यह Internet सेवाओं और Web तकनीकी से युक्त on-line अधिगम है।

2. यह computer सह अधिगम तथा computer आधारित अधिगम से अधिक व्यापक है।

3. इसमें Internet आधारित सम्प्रेषण जैसे- E-mail, video.conferencing और Web आधारित अनुदेशन अवश्य सम्मिलित होते हैं।

⇒ **E-learning के लाभ** :- E-learning के निम्न लाभ है -

1. जिन अधिगमकर्ताओं के पास परम्परागत कक्षा-शिक्षण के लिए समय एवं संसाधन नहीं है वे ई-अधिगम के रूप में अपनी सुविधा के अनुसार अधिगम प्राप्त कर सकते है।

2. इसके द्वारा अधिगमकर्ता किसी भी समय तथा स्थान पर सूचनाऐं प्राप्त कर सकता है।

3. इसके द्वारा छात्र उसी गुणवत्ता की अधिगम सामग्री प्राप्त कर सकते है।

4. इसके द्वारा छात्र अपने मानसिक स्तर, कौशल, रूचि, स्थानीय आवश्यकताओं और संसाधनों के अनुसार अधिगम प्राप्त कर सकते हैं।

5. ई-अधिगम द्वारा छात्र विभिन्न प्रकार की अधिगम विधियों से ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

⇒ **E-learning की सीमाएं** :- ई-अधिगम की निम्न सीमाए है -

1. E-learning प्राप्त करने के लिए छात्र के पास आवश्यक संसाधनों जैसे :- computer, Laptop, Internet, Web सेवाए आदि की आसान उपलब्धता होनी चाहिए।

2. E-learning के लिए छात्र को बहुसंचार माध्यमों, Internet, Web तकनीकी आदि का ज्ञान एवं कौशल होना चाहिए।

हमारे देश के विद्यालय E-learning प्रदान करने के लिए संसाधनों से युक्त नहीं है। इससे छात्रों को E-learning का लाभ नहीं मिल पाता है।

4. E-learning के संबंध में छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों में नकारात्मक भाव होते हैं।

5. शिक्षकों को उनके कार्यस्थल पर E-learning से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक E-learning के लिए छात्रों को प्रेरित नहीं कर पाते हैं।